Vol 1 Issue 11 May 2012 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
Volume 1, Issue. 11, May. 2012
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

बाल साहित्य में नवीन संभावनाएँ

सोनाली निनामा

शोधार्थी , दे.अ.वि.वि., इन्दौर.

सारांश :

इक्कीसवीं सदी में बालसाहित्य समृद्ध और प्रतिष्ठित साहित्य-रूप में अपनी पहचान बना चुका है। किसी भी राष्ट्र के विकास में बालसाहित्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसीलिए साहित्यकारों का रूझान बालसाहित्य की ओर रहा है। बालसाहित्य मनोरंजन के माध्यम से बालकों में ज्ञान, संस्कार और नैतिकता का विकास करता है। सामाजिकता का ज्ञान कराते हुए वह लोक व्यवहार की शिक्षा भी देता है।

***प्रस्तावना* :**

आज सूचना प्रौद्योगिकी के विस्फोट-युग में बालक की सोच अधिक गहरी हुई है। वह विज्ञान तथा तकनीकी खोजों के साथ ही अन्य अविष्कारों को जानने में रुचि रखता है। उसकी सोच भी वैज्ञानिक हो गई है। अब वह अपने प्रश्नों के उत्तर वैज्ञानिक तरीके से जानना चाहता है। अतः बालसाहित्यकारों ने भी अपनी रचनाओं में युगानरूप परिवर्तन स्वीकारते हुए सहज सरल भाषा-शैली में बहुआयामी कथ्य को मनोवैज्ञानिक, सत्यपरक और बाल रंजक रूप में प्रस्तुत किया है।

२१ वीं सदी का बालसाहित्य बहुआयामी है इसमें अनुभव एवं चिंतन के नए धरातल एवं सृजनात्मकता के नए आयाम उद्घाटित हुए हैं। एक ओर तो उसमें चाँद को छूने की कोशिश की है, वहीं दूसरी ओर नवीन खोज के रूप में मंगल और शनि ग्रह की कल्पना को साकार किया है। हमारे बालसाहित्यकारों ने बच्चों को ऐसी बहुत सी रचनाएँ दी हैं जो अंतरिक्ष से जुड़े तथ्यों की जानकारियाँ देती हैं। चिकित्सा क्षेत्र की नवीन तकनीकी, खगोलशास्त्र, स्वास्थ्य विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र तथा जीव विज्ञान से जुड़े नवीनतम तथ्यों की जानकारी देने हेतु बालसाहित्य निरन्तर प्रयासरत है।

राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण आज के युग की प्रथम आवश्यकता है। बाल कविताएँ इस आवश्यकता-पूर्ति की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। ये हमारे अतीत का स्वर्णिम चित्र उपस्थित करते हुए वर्तमान को परखने और भविष्य को संवारने की प्रेरणा देती हैं। अतीत का गौरव गान तथा वीर शहीदों की बलिदान गाथाएँ बालकों में देशसेवा एवं प्रेम का संचार करने के साधन के रूप में पुनः प्रयुक्त की जाना चाहिए।

आज २१ वीं सदी में पर्यावरण संतुलन और संरक्षण हमारी प्राथमिक आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु बच्चों में पर्यावरण चेतना संस्कार रूप में जागृत करने की आवश्यकता है क्योंकि यदि बचपन से बच्चों में जागृति होगी तो उनकी आदतें भी उसी रूप में विकसित होगी, और हम पर्यावरण को संरक्षित कर सकेंगे। पर्यावरण चेतना को बालकों में संस्कार रूप में विकसित करने के लिए निरन्तर प्रयास की संभावनाएँ हैं।

बालसाहित्यकारों ने समय की माँग को समझते हुए बाल मनोविज्ञान की दिशा में सशक्त कदम उठाए हैं। बाल कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, चित्रकथा आदि विधाओं में बाल मनोविज्ञान को आधार बनाते हुए बच्चों को भविष्य निर्माण के महत्त्वपूर्ण संदेश एवं ज्ञानात्मक सूचनाएँ प्रदान की गई हैं।

२१ वीं सदी में बाल कविता, कहानी, उपन्यास के क्षेत्र में तकनीकी विज्ञान संबंधित लेखन प्रचुर मात्रा में

Title : *बाल साहित्य में नवीन संभावनाएँ*
Source: Golden Research Thoughts [2231-5063] *सोनाली निनामा* **yr:2012 vol:1 iss:11.**

हुआ है तथा उसका लाभ भी बालकों को मिल रहा हैं परन्तु बाल नाटक के क्षेत्र में हम देखते हैं कि तकनीकी विज्ञान से संबंधित लेखन बहुत कम हुआ है जबकि यह विधा बालकों को अधिक लुभाती व आकर्षित करती है बालसाहित्यकारों को परिवर्तित समय में नवीन तकनीकी विज्ञान पर आधारित भिन्न-भिन्न विषयों पर बाल नाटक लिखें जाने की आवश्यकता हैं।

बाल चित्रकथा का एनिमेशन रूप बालकों को बहुत लुभा रहा है ऐनिमेशन के माध्यम से अनेक पौराणिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, हास्य आदि चित्रकथाएँ बच्चों को मिली हैं। इस क्षेत्र में और अधिक संभावनाएँ हैं। थ्रीडी के रूप में अभी भी बालसुलभ चित्रकथाओं का निर्माण कम ही हुआ है। विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में ऐसे कई विषय हैं जिनमें एनिमेशन चित्रकथा तथा थ्रीडी के रूप बालकों के लिए तैयार किये जा सकते हैं।

यह ठीक है कि २१ वीं सदी में वैज्ञानिक बालसाहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा जाना चाहिए किन्तु इस चक्कर में ग्रामीण अंचल से जुड़े विषयों की उपेक्षा भी नहीं होनी चाहिए। वर्तमान में वैज्ञानिक बालसाहित्य की धूम मचने के कारण तथा बालसाहित्यकारों के शहर के प्रति आकर्षित होने के कारण ग्रामीण अंचल के विषयों एवं वहाँ के परिवेश की बालसाहित्य में उपेक्षा होने लगी है। ग्रामीण परिवेश में अपनी भारतीय संस्कृति की सच्ची तस्वीर मिलती है। ग्रामीण अंचल में बालकों को बालसाहित्य की पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध भी नहीं हो पा रही हैं। इस क्षेत्र में बालसाहित्य के विकास की उज्ज्वल संभावनाएँ हैं।

मैंने अपने अध्ययन में यह अनुभव किया है कि बच्चों के स्तर के रिपोतार्ज, परिचर्चा, यात्रा वर्णन एवं संस्मरण लेखन में साहित्यकारों का रूझान कम हैं। कुछ कृतियाँ अवश्य सामने आई हैं, कहीं-कहीं किसी पत्रिका में ये पढ़ने को मिलती हैं, जबकि बालसाहित्य को समृद्ध बनाने एवं उसके समुचित विकास के लिए इनका लेखन परमावश्यक हैं।

आज साहित्यकारों का दायित्व है कि वे समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, कुरीतियों और भ्रामक धारणाओं को उजागर कर बच्चों को सत्य से परिचित कराएँ। समाज में कई चीजों को लेकर अंधविश्वास फैले हुए हैं जैसे- छींक आना अशुभ है, बिल्ली का रास्ता काटना अशुभ है, पीपल पर भूत का वास है, साँप को मार दे, तो दूसरा साँप बदला लेगा, कौए का घर आना अशुभ है, उल्लू देखना अशुभ है आदि अनेक भ्रामक धारणाएँ समाज तथा बच्चों में फैली हुई हैं इन सभी धारणाओं को तोड़ने के लिए वैज्ञानिक सोच आवश्यक है बालसाहित्यकारों को इस ओर अधिक ध्यान देकर रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों का उन्मूलन करने वाला प्रेरक साहित्य रचना होगा।

२१ वीं सदी के बच्चे समय से कहीं आगे हैं पढ़ाई के साथ-साथ अन्य प्रकार की अनेक गतिविधियों के लिए वे प्रयत्न करते हैं परिणामस्वरूप उनके जीवन में अनावश्यक उलझनें पैदा हो रही हैं। आज के प्रतिस्पर्धा के युग में बच्चे छोटी सी असफलता या प्रतिकूलता को अपने जीवन से भी श्रेष्ठ मान लेते हैं और आत्महत्या की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं। इन सब विषम परिस्थितियों में बालसाहित्य आवश्यक है कि अत्मविश्वास और विपरीतताओं में आगे बढ़ने का साहस दिलाने वाला प्रेरक साहित्य अधिक मात्रा में उन्हें मिलें। वे चुनौतियों को स्वीकारना सीख सकें।

बालक राष्ट्र का भविष्य होता है एक सुनागरिक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को नैतिकता व सदाचार की शिक्षा दी जाए ये गुण ऊपर से नहीं थोपे जा सकते हैं इन्हें तो साहित्य के माध्यम से प्रविष्ट किया जा सकता है। बालसाहित्य सरलता, प्रमाणिकता तथा नवीनता की रक्षा करते हुए नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी खेल-खेल में या मनोरंजन के माध्यम से दे सकता है।

आज बालक के ज्ञान में बड़ी तेजी से परिवर्तन आया है। यह अलग बात है कि परिवर्तन का स्तर महानगर, शहर, कस्बे और गाँव में भिन्न-भिन्न है। बालमन के ये परिवर्तन काफी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। २१ वीं सदी के भारतीय परिवारों में बालक को अपनी बात कहने की संपूर्ण आजादी है। अपने हितों के लिए, अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता उसे प्राप्त है। माता-पिता एवं परिवार के मार्गदर्शन में वह परिवार भाव से जुड़ता है। बालक में नैतिक मूल्यों, संस्कारों, राष्ट्रीय, धार्मिक एवं सामाजिक चेतना का उदय करने में परिवार की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। इसीलिए बालसाहित्य में परिवार भावना को संरक्षण एवं प्रोत्साहन दिए जाने की आवश्यकता है।

इक्कीसवीं सदी बालसाहित्य का स्वर्णयुग है। इस समय बालसाहित्य की सभी परम्परित विधाएँ न केवल समृद्ध हुई हैं वरन् कई नई विधाओं का जन्म और विकास भी हुआ है। बालसाहित्य का कथ्य एवं शिल्प बहुआयामी बने हैं। नई सोच, तकनीक, अन्वेषण, आविष्कार तथा विकसित नवपरम्पराओं ने बालसाहित्य को अभिनव क्षमताओं से सम्पन्न किया है।

ब्लाग्स, ई सिनेमा, ई बुक, ग्राफिक्स, डिजाइनिंग, एनिमेशन आदि नवविकसित विधाओं को बालसाहित्य में अधिक महत्त्व देते हुए सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है। इस दिशा में कार्य हो रहा है पर बालकों की रुचि और आवश्यकता को देखते हुए इसे अधिक समृद्ध करना आवश्यक है। बालकों के लिए इन्टरनेट पर हिन्दी की नई साइड की संख्या बढ़ाना तथा उसकी जानकारी बच्चों तक पहुँचाना आवश्यक है। बच्चों के मनोनुकूल साइड पर सामग्री उपलब्ध होगी तो वे अन्य अनावश्यक साइड देखने से बचेंगे जो उन्हें समयपूर्व परिपक्व बनाकर उनका बचपन छीन रही हैं।

आज सूचना विस्फोट एवं विश्वग्राम की परिकल्पना ने बालसाहित्य में नवीन संभावनाओं को जन्म दिया है। अच्छे ब्लाग्स, मल्टीमीडिया सोशल नेटवर्किंग जैसे क्षेत्र बालोचित श्रेष्ठ लेखन की प्रतीक्षा में हैं। हमें बालसाहित्य से इन साधनों को जोड़ना ही होगा ताकि बच्चों को अच्छे संस्कार मिलते रहें।

हमारा देश बहुभाषा भाषी है। हमें हिन्दी बालसाहित्य को अनुवादों के माध्यम से भारतीय बालसाहित्य से जोड़ना होगा। हिन्दी से अन्य भाषाओं में तथा अन्य भाषाओं से हिन्दी में श्रेष्ठ अनुवाद को प्रोत्साहन देकर बालसाहित्य को अधिक समृद्ध किया जाना चाहिए जिससे बच्चे विविध प्रान्तों की परम्पराओं और परिवेश का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

बालसाहित्य में आधुनिकतम अन्वेषणों तथा तकनीकों की जानकारी भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराने की संभावनाएँ हैं विशेष रूप से चिकित्सा और प्राकृतिक स्रोतों के संरक्षण हेतु नवीन अनुसंधानों की जानकारी देकर बालसाहित्य को युगानुरूप अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है। आजकल बालसाहित्य में अधिक जानकारियाँ नेट से ग्रहीत की जा रही हैं जिनमें विश्वसनीयता कम है - एक ही विषय पर विभिन्नताएँ उन्हें संदिग्ध बना देती हैं। विशेष रूप से विज्ञान और तकनीक आधारित साहित्य लेखन के क्षेत्र से विषय विशेषज्ञों को जोड़ना आवश्यक है जिससे लेखन को प्रामाणिक आधार मिल सके।

प्रख्यात चिकित्सक एवं साहित्यकार डॉ. मनोहर भंडारी ने श्मधुमेह और उसकी सावधानियाँश एवं चिकित्सा तथा स्वास्थ्य को पर्यावरण के साथ जोड़कर 'जब रूठे गणेशजी' जैसी बालमन को लुभाने वाली पुस्तकों का लेखन कार्य किया है। जो प्रशंसनीय शुरूआत कही जा सकती है।

बालसाहित्य पर शोधपरक अध्ययन समय की आवश्यकता है जिससे उसे प्रामाणिक, सर्वमान्य स्वरूप प्राप्त हो सके। इस दिशा में कार्य हो रहा है फिर भी कई क्षेत्र अछूते हैं। विभिन्न बोलियों का बालसाहित्य, मौखिक परम्परा के रूप में विकसित बालसाहित्य, प्रतिष्ठित कवियों द्वारा रचित साहित्य में प्रच्छन्न बालसाहित्य आदि क्षेत्र शोध अध्ययन के आकांक्षी हैं।

२१ वीं सदी का बालक देश का भावी नागरिक है इस संचार क्रांति में वह अपनी परम्पराएँ, अपना इतिहास, संस्कृति, संस्कार भूल न जाए इसीलिए बाल साहित्यकारों को भारतीय संस्कृति, गौरवपूर्ण इतिहास तथा सामाजिक व्यवहार के संस्कार से जोड़कर रखने वाला बालसाहित्य प्रचुर मात्रा में लिखना होगा।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org